



## महात्मा गाँधी के सामाजिक चिंतन में नारी की भूमिका और वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन

### सारांश

#### शशि कुशवाह

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान  
जीवाजी विश्वविद्यालय,  
ग्वालियर (म. प्र.)

#### डॉ. रतन सिन्हा

मार्गदर्शक, प्राध्यापक  
राजनीति विज्ञान विभाग  
शासकीय विजयाराजे  
कन्या महाविद्यालय,  
ग्वालियर (म. प्र.)

#### Paper Received date

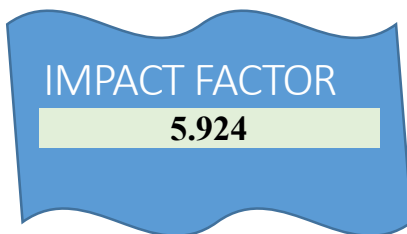
05/12/2025

#### Paper date Publishing Date

10/12/2025

#### DOI

<https://doi.org/10.5281/zenodo.21005347>



महात्मा गाँधी भारतीय समाज सुधार के उन प्रमुख विचारकों में से हैं जिन्होंने महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की धुरी माना। उनके अनुसार नारी केवल परिवार की संरक्षिका नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के नैतिक पुनर्निर्माण की आधारशिला है। गाँधीजी ने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकारों का समर्थक माना तथा उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। उन्होंने नारी को अहिंसा, सत्य, त्याग, करुणा तथा नैतिक शक्ति का प्रतीक बताया। उनके सामाजिक चिंतन में महिलाओं की शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सामाजिक सम्मान, राजनीतिक सहभागिता तथा आर्थिक स्वावलम्बन को विशेष महत्व दिया गया है। वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु अनेक योजनाएँ एवं नीतियाँ संचालित की जा रही हैं। इनमें बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, महिला शक्ति केन्द्र योजना, उज्ज्वला योजना, वन स्टॉप सेंटर योजना, महिला हेल्पलाइन, राष्ट्रीय महिला नीति तथा विभिन्न स्वरोजगार कार्यक्रम प्रमुख हैं। इन नीतियों का उद्देश्य महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक रूप से सशक्त बनाना है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में महात्मा गाँधी के नारी संबंधी सामाजिक चिंतन तथा वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह जात करना है कि गाँधीवादी विचारधारा आज की नीतियों में किस सीमा तक परिलक्षित होती है तथा वर्तमान योजनाएँ महिलाओं के वास्तविक सशक्तिकरण में कितनी प्रभावी सिद्ध हो रही हैं। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का



उपयोग किया गया है। शोध के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि वर्तमान नीतियों में गाँधीजी के अनेक विचारों की छाप दिखाई देती है, किन्तु व्यवहारिक स्तर पर अभी भी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। अतः नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन तथा सामाजिक चेतना के विकास की आवश्यकता है ताकि महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त किया जा सके।

**कुंजी शब्द** : महात्मा गाँधी, सामाजिक चिंतन, नारी, महिला सशक्तिकरण, महिला नीति, समानता, आत्मनिर्भरता, शिक्षा, सामाजिक न्याय, गाँधीवाद।

### प्रस्तावना

भारतीय समाज में नारी की स्थिति समय के साथ निरंतर परिवर्तित होती रही है। वैदिक काल में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था, किन्तु मध्यकालीन परिस्थितियों तथा सामाजिक कुरीतियों के कारण उनकी स्थिति में गिरावट आई। आधुनिक भारत में सामाजिक सुधार आंदोलनों ने महिलाओं की दशा सुधारने का प्रयास किया, जिनमें महात्मा गाँधी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। गाँधीजी ने भारतीय महिलाओं को केवल घरेलू दायित्वों तक सीमित न मानकर उन्हें राष्ट्र निर्माण की सक्रिय भागीदार के रूप में देखा। उनके विचारों ने भारतीय समाज में महिला जागरण की नई चेतना उत्पन्न की। महात्मा गाँधी का सामाजिक चिंतन सत्य, अहिंसा, समानता, मानवता तथा नैतिकता के सिद्धान्तों पर आधारित था। वे मानते थे कि किसी भी समाज की प्रगति का आकलन उस समाज में महिलाओं की स्थिति के आधार पर किया जा सकता है। गाँधीजी ने महिलाओं को पुरुषों से कमतर नहीं माना, बल्कि अनेक संदर्भों में उन्हें अधिक नैतिक और संवेदनशील बताया। उनका विचार था कि महिलाओं में त्याग, सहनशीलता और करुणा की जो शक्ति होती है, वही समाज को नैतिक दिशा प्रदान कर सकती है।

गाँधीजी ने महिलाओं की शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का आधार माना। उनका विश्वास था कि यदि एक पुरुष शिक्षित होता है तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है, किन्तु यदि एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। इसलिए उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को राष्ट्रीय विकास से जोड़ा। वे ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाए तथा उनमें सामाजिक चेतना का विकास करे। महात्मा गाँधी ने बाल विवाह, पर्दा

प्रथा, दहेज प्रथा, अस्पृश्यता तथा लैंगिक भेदभाव जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उन्होंने महिलाओं को इन कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी गाँधीजी की इसी सोच का परिणाम थी। उनके नेतृत्व में हजारों महिलाओं ने सत्याग्रह, विदेशी वस्त्र बहिष्कार, नमक आंदोलन तथा अन्य राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया। इससे महिलाओं में आत्मविश्वास और राजनीतिक चेतना का विकास हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए। समय के साथ महिला विकास एवं सशक्तिकरण के लिए अनेक नीतियाँ और कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए। वर्तमान में महिला सशक्तिकरण को सामाजिक विकास की अनिवार्य शर्त माना जाता है। महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सुरक्षा तथा आर्थिक अवसर प्रदान करने हेतु विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। यद्यपि वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, तथापि लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर भेदभाव, आर्थिक निर्भरता तथा सामाजिक रूढ़िवादिता जैसी समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए केवल नीतियाँ पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण और जागरूकता का विकास भी आवश्यक है। इस संदर्भ में महात्मा गाँधी के नारी संबंधी विचार आज भी अत्यन्त प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनका सामाजिक चिंतन महिला सशक्तिकरण की वर्तमान अवधारणा को नैतिक एवं मानवीय आधार प्रदान करता है। इसलिए गाँधीवादी दृष्टिकोण तथा वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन समकालीन भारतीय समाज को समझने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत शोध-पत्र इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। इसमें यह विश्लेषण किया जाएगा कि गाँधीजी के विचारों और वर्तमान नीतियों के बीच कौन-कौन सी समानताएँ और भिन्नताएँ विद्यमान हैं तथा महिला सशक्तिकरण की दिशा में इनकी प्रभावशीलता कितनी है।

### शोध समस्या कथन

“महात्मा गाँधी के सामाजिक चिंतन में नारी की भूमिका और वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन”

## शोध समस्या का औचित्य

महात्मा गाँधी ने महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्रीय विकास का प्रमुख साधन माना था। वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण को राष्ट्रीय विकास की आधारशिला माना जा रहा है तथा अनेक सरकारी नीतियाँ एवं योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। इसके बावजूद महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि गाँधीजी के नारी संबंधी विचार वर्तमान नीतियों में किस प्रकार प्रतिबिम्बित होते हैं तथा इन नीतियों की वास्तविक प्रभावशीलता क्या है। यही इस शोध समस्या के चयन का प्रमुख आधार है।

## शोध के उद्देश्य

1. महात्मा गाँधी के सामाजिक चिंतन में नारी की भूमिका का अध्ययन करना।
2. गाँधीजी के महिला संबंधी विचारों का विश्लेषण करना।
3. वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों एवं योजनाओं का अध्ययन करना।
4. गाँधीवादी विचारधारा और वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों के मध्य समानताओं का परीक्षण करना।
5. गाँधीवादी दृष्टिकोण एवं वर्तमान नीतियों के मध्य विद्यमान भिन्नताओं का विश्लेषण करना।
6. महिला सशक्तिकरण की दिशा में वर्तमान नीतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
7. महिला सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

## परिकल्पनाएँ

1. महात्मा गाँधी के सामाजिक चिंतन में महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति माना गया है।
2. वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों में गाँधीवादी विचारधारा के तत्व विद्यमान हैं।
3. महिलाओं की शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता के संबंध में गाँधीजी के विचार वर्तमान नीतियों से सामंजस्य रखते हैं।
4. वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों ने महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया है।

5. महिला सशक्तिकरण की वर्तमान नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में अभी भी अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।
6. गाँधीवादी दृष्टिकोण महिला सशक्तिकरण की समकालीन नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक हो सकता है।

### **महात्मा गाँधी के सामाजिक चिंतन वैचारिक आधार एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य**

महात्मा गाँधी का सामाजिक चिंतन भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों, सत्य, अहिंसा और मानव समानता के सिद्धान्तों पर आधारित था। उनके विचारों का मूल उद्देश्य ऐसे समाज की स्थापना करना था जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान, स्वतंत्रता तथा विकास के समान अवसर प्राप्त हों। गाँधीजी ने महिलाओं को इस आदर्श समाज के निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। उनके अनुसार नारी केवल परिवार की सदस्य नहीं है, बल्कि वह समाज की नैतिक शक्ति, सांस्कृतिक संवाहक तथा राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। इसलिए उन्होंने महिलाओं के उत्थान को सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का अनिवार्य अंग माना।

गाँधीजी का विश्वास था कि किसी भी समाज की वास्तविक उन्नति का आकलन उस समाज में महिलाओं की स्थिति के आधार पर किया जाना चाहिए। यदि महिलाएँ शिक्षित, आत्मनिर्भर और सम्मानित होंगी तो समाज स्वतः ही प्रगतिशील बनेगा। यही कारण था कि उन्होंने महिलाओं की समस्याओं को केवल महिलाओं का प्रश्न न मानकर सम्पूर्ण समाज का प्रश्न माना। उनके विचारों में महिला सशक्तिकरण केवल अधिकार प्राप्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें आत्मसम्मान, नैतिक शक्ति, आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहभागिता का समावेश था।

**गाँधीजी की दृष्टि में नारी का स्वरूप :** महात्मा गाँधी महिलाओं को पुरुषों के समान मानव अधिकारों का अधिकारी मानते थे। उनका विचार था कि स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने कहा कि प्रकृति ने दोनों को भिन्न-भिन्न गुण प्रदान किए हैं, किन्तु इसका अर्थ किसी प्रकार की श्रेष्ठता या हीनता नहीं है। उनके अनुसार नारी और पुरुष समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं; यदि इनमें से एक भी कमजोर होगा तो समाज की प्रगति बाधित हो जाएगी। गाँधीजी ने नारी को प्रेम, त्याग, सेवा, सहनशीलता तथा करुणा की प्रतिमूर्ति माना। उनका विश्वास था कि महिलाओं में नैतिक शक्ति पुरुषों की अपेक्षा अधिक होती है। उन्होंने लिखा कि यदि अहिंसा मानव जीवन का नियम है तो भविष्य महिलाओं के हाथ में है, क्योंकि उनमें प्रेम और सहनशीलता की शक्ति अधिक होती है। यह विचार उनके नारी

संबंधी दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है कि वे महिलाओं को केवल सामाजिक संरचना का भाग नहीं, बल्कि नैतिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति मानते थे।

गाँधीजी महिलाओं को निर्बल या आश्रित नहीं मानते थे। उनका कहना था कि महिलाओं को अपनी शक्ति का बोध होना चाहिए तथा उन्हें आत्मविश्वास के साथ समाज में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। वे महिलाओं की स्वतंत्र पहचान के समर्थक थे और मानते थे कि महिलाओं को केवल पुरुषों पर निर्भर रहकर नहीं, बल्कि स्वयं की क्षमता के आधार पर जीवन जीना चाहिए।

**सामाजिक समानता और महिला अधिकार :** महात्मा गाँधी ने स्त्री-पुरुष समानता को सामाजिक न्याय का आधार माना। उनके अनुसार महिलाओं को वही अधिकार प्राप्त होने चाहिए जो पुरुषों को प्राप्त हैं। वे महिलाओं को मतदान, शिक्षा, रोजगार तथा सार्वजनिक जीवन में सहभागिता के समान अवसर प्रदान करने के पक्षधर थे। उस समय भारतीय समाज में महिलाओं के साथ अनेक प्रकार के भेदभाव होते थे। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था तथा सामाजिक निर्णयों में उनकी भागीदारी अत्यन्त सीमित थी। गाँधीजी ने इन असमानताओं का विरोध किया। उनका विचार था कि किसी भी प्रकार का लैंगिक भेदभाव सामाजिक प्रगति में बाधक है। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों की वकालत करते हुए कहा कि स्वतंत्रता केवल पुरुषों का विशेषाधिकार नहीं हो सकती। यदि राष्ट्र को स्वतंत्र बनाना है तो महिलाओं को भी समान रूप से स्वतंत्र और सशक्त बनाना होगा। यही कारण था कि उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं को सक्रिय रूप से सम्मिलित किया और उन्हें नेतृत्व की भूमिकाएँ प्रदान कीं। गाँधीजी की दृष्टि में समानता का अर्थ केवल कानूनी समानता नहीं था, बल्कि सामाजिक सम्मान और अवसरों की समानता भी था। वे चाहते थे कि महिलाएँ समाज में निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा बनें तथा अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं लेने में सक्षम हों।

**महिला शिक्षा का महत्त्व :** महात्मा गाँधी ने महिला शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी साधन माना। उनका विश्वास था कि महिलाओं की शिक्षा से न केवल उनका व्यक्तिगत विकास होगा, बल्कि सम्पूर्ण समाज का विकास भी सुनिश्चित होगा। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का आधार बताया।

गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। वे ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो महिलाओं में आत्मविश्वास, नैतिकता, सामाजिक चेतना तथा व्यावहारिक कौशल का विकास करे। उनका

मानना था कि शिक्षित महिला अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में अधिक प्रभावी योगदान दे सकती हैं। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को आर्थिक आत्मनिर्भरता से भी जोड़ा। उनका विचार था कि यदि महिलाएँ शिक्षित होंगी तो वे रोजगार प्राप्त कर सकेंगी, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होंगी तथा सामाजिक अन्याय का विरोध करने में सक्षम बनेंगी। गाँधीजी ने ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया। वे मानते थे कि भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है, इसलिए ग्रामीण महिलाओं का विकास राष्ट्रीय विकास के लिए अनिवार्य है। उन्होंने बुनियादी शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाने की वकालत की।

**आत्मनिर्भरता और आर्थिक सशक्तिकरण :** महात्मा गाँधी का विचार था कि आर्थिक निर्भरता महिलाओं की अनेक समस्याओं का मूल कारण है। यदि महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनेंगी तो उनका सामाजिक सम्मान और आत्मविश्वास दोनों बढ़ेंगे। इसलिए उन्होंने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को अत्यन्त महत्व दिया। गाँधीजी ने स्वदेशी और कुटीर उद्योगों को महिलाओं के आर्थिक विकास का प्रभावी माध्यम माना। चरखा आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने महिलाओं को सूत कातने, हस्तशिल्प तथा अन्य घरेलू उद्योगों से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास किया। उनका मानना था कि आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को शोषण और पराधीनता से मुक्त कर सकती है। जब महिला स्वयं आय अर्जित करेगी तो वह अपने जीवन से संबंधित निर्णय अधिक स्वतंत्रता के साथ ले सकेगी। इस प्रकार आर्थिक सशक्तिकरण को उन्होंने महिला मुक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन माना। गाँधीजी के आर्थिक विचारों का मूल उद्देश्य केवल आय वृद्धि नहीं था, बल्कि सम्मानजनक जीवन, श्रम की गरिमा तथा आत्मनिर्भरता की स्थापना था। उनके अनुसार प्रत्येक महिला को अपनी क्षमता के अनुसार उत्पादन कार्यों में योगदान देना चाहिए।

### **सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध गाँधीजी का संघर्ष**

महात्मा गाँधी ने महिलाओं के विकास में बाधक सामाजिक कुरीतियों का दृढ़तापूर्वक विरोध किया। उन्होंने बाल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, अस्पृश्यता तथा लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याओं को सामाजिक बुराईयाँ माना।

**बाल विवाह का विरोध :** गाँधीजी बाल विवाह को महिलाओं के शारीरिक, मानसिक और शैक्षिक विकास में बाधक मानते थे। उनका विचार था कि कम आयु में विवाह से महिलाओं

का व्यक्तित्व विकास रुक जाता है तथा वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो पातीं। इसलिए उन्होंने बाल विवाह की प्रथा समाप्त करने का समर्थन किया।

**दहेज प्रथा का विरोध :** गाँधीजी दहेज प्रथा को सामाजिक शोषण का माध्यम मानते थे। उनके अनुसार विवाह एक पवित्र सामाजिक संस्था है और इसे आर्थिक लेन-देन का साधन नहीं बनाया जाना चाहिए। उन्होंने युवाओं और अभिभावकों से दहेज प्रथा का बहिष्कार करने का आह्वान किया।

**पर्दा प्रथा पर विचार :** गाँधीजी का मानना था कि महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान का आधार पर्दा नहीं, बल्कि समाज की नैतिकता है। वे पर्दा प्रथा को महिलाओं की स्वतंत्रता और आत्मविश्वास में बाधा मानते थे। उन्होंने महिलाओं को सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

**अस्पृश्यता और लैंगिक भेदभाव :** गाँधीजी ने हर प्रकार के भेदभाव का विरोध किया। उनका विचार था कि जिस समाज में महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है, वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता। उन्होंने महिलाओं को समान सम्मान और अवसर प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया।

### स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

महात्मा गाँधी का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न अंग बनाया। स्वतंत्रता संघर्ष से पूर्व महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में भागीदारी अत्यन्त सीमित थी, किन्तु गाँधीजी ने उन्हें राष्ट्रीय चेतना से जोड़कर एक नई सामाजिक शक्ति के रूप में स्थापित किया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, नमक सत्याग्रह तथा भारत छोड़ो आंदोलन में हजारों महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी की। महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया, धरनों और प्रदर्शनों में भाग लिया तथा जेल यात्राएँ भी कीं। इससे महिलाओं में राजनीतिक चेतना और आत्मविश्वास का विकास हुआ।

गाँधीजी का मानना था कि स्वतंत्रता संघर्ष केवल राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि सामाजिक जागरण का भी माध्यम है। महिलाओं की भागीदारी ने इस आंदोलन को व्यापक जनाधार प्रदान किया। यही कारण है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को महिला जागरण का भी आंदोलन माना जाता है। महिलाओं की इस सक्रिय भागीदारी ने भारतीय समाज में उनकी स्थिति को सुदृढ़ किया तथा स्वतंत्र भारत में महिला अधिकारों और समानता की अवधारणा को मजबूत आधार प्रदान किया।

## गाँधीजी का नारी सशक्तिकरण मॉडल

गाँधीजी के नारी सशक्तिकरण मॉडल के प्रमुख आधार निम्नलिखित थे—

1. स्त्री-पुरुष समानता।
2. महिला शिक्षा का प्रसार।
3. आर्थिक आत्मनिर्भरता।
4. सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन।
5. नैतिक एवं चारित्रिक विकास।
6. राजनीतिक सहभागिता।
7. आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास का विकास।
8. अहिंसा और सामाजिक सेवा के माध्यम से नेतृत्व क्षमता का विकास।

उनका मॉडल केवल अधिकारों पर आधारित नहीं था, बल्कि कर्तव्यों, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व पर भी आधारित था। यही इसकी विशिष्टता है।

## वर्तमान महिला सशक्तिकरण

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने महिलाओं के विकास एवं सशक्तिकरण को राष्ट्रीय विकास की प्राथमिकताओं में सम्मिलित किया। भारतीय संविधान ने महिलाओं को समानता, स्वतंत्रता, गरिमा एवं न्याय के अधिकार प्रदान किए। संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 21, 39 तथा 42 महिलाओं के अधिकारों और कल्याण से संबंधित महत्वपूर्ण प्रावधान प्रस्तुत करते हैं। समय के साथ केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक विकास हेतु अनेक नीतियाँ और योजनाएँ प्रारम्भ की गईं। इन नीतियों का मूल उद्देश्य महिलाओं को समाज की मुख्यधारा में लाना तथा उन्हें आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाना है। यदि इन नीतियों का अध्ययन महात्मा गाँधी के सामाजिक चिंतन के आलोक में किया जाए तो स्पष्ट होता है कि वर्तमान महिला सशक्तिकरण की अवधारणा में गाँधीवादी विचारधारा के अनेक तत्व समाहित हैं। यद्यपि समय, परिस्थितियों और चुनौतियों के कारण इनके स्वरूप में परिवर्तन अवश्य हुआ है, तथापि मूल भावना आज भी महिला सम्मान, समानता और आत्मनिर्भरता पर आधारित है।

**महिला सशक्तिकरण की अवधारणा :** महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक तथा कानूनी रूप से इतना सक्षम बनाना है कि वे अपने जीवन

से संबंधित निर्णय स्वयं ले सकें तथा समाज में समान अवसर प्राप्त कर सकें। यह केवल अधिकार प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और नेतृत्व क्षमता विकसित करने की प्रक्रिया भी है। संयुक्त राष्ट्र संघ तथा विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने महिला सशक्तिकरण को सतत विकास का आधार माना है। भारत में भी महिला सशक्तिकरण को सामाजिक न्याय, समावेशी विकास तथा लोकतांत्रिक सुदृढीकरण की अनिवार्य शर्त माना गया है। महात्मा गाँधी भी महिलाओं की स्वतंत्र पहचान और निर्णय क्षमता के समर्थक थे। इसलिए आधुनिक महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को गाँधीवादी चिंतन का विस्तारित स्वरूप कहा जा सकता है।

### **भारत में महिला सशक्तिकरण हेतु प्रमुख नीतियाँ एवं योजनाएँ**

**बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना :** यह योजना बालिका शिक्षा तथा बालिका संरक्षण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रारम्भ की गई। इसका प्रमुख लक्ष्य घटते लिंगानुपात को सुधारना तथा समाज में बालिकाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना है। महात्मा गाँधी ने महिला शिक्षा को राष्ट्रीय विकास का आधार माना था। इस दृष्टि से यह योजना गाँधीजी की शिक्षा संबंधी अवधारणा के अत्यन्त निकट दिखाई देती है। गाँधीजी का विश्वास था कि शिक्षित महिला पूरे समाज को शिक्षित कर सकती हैं। वर्तमान योजना भी इसी उद्देश्य को आगे बढ़ाती है।

**प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना :** यह योजना गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करती है ताकि मातृ स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सुधार किया जा सके। गाँधीजी महिलाओं के स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन को सामाजिक विकास का आधार मानते थे। उनका विचार था कि स्वस्थ महिला ही स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकती है। अतः यह योजना गाँधीवादी मानव कल्याण दृष्टिकोण से मेल खाती है।

**महिला शक्ति केन्द्र योजना :** इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को जागरूक, प्रशिक्षित तथा आत्मनिर्भर बनाना है। इसके माध्यम से महिलाओं को कौशल विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। गाँधीजी ने ग्रामीण भारत को राष्ट्र की आत्मा कहा था। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं के विकास को राष्ट्रीय विकास की अनिवार्य शर्त माना। इस दृष्टि से महिला शक्ति केन्द्र योजना गाँधीवादी ग्राम स्वराज की अवधारणा का आधुनिक स्वरूप प्रतीत होती है।

**उज्ज्वला योजना :** इस योजना के माध्यम से गरीब परिवारों की महिलाओं को स्वच्छ ईंधन उपलब्ध कराया गया है। इससे महिलाओं के स्वास्थ्य, समय तथा श्रम की बचत हुई है। गाँधीजी महिलाओं के श्रम को सम्मान देने के पक्षधर थे। वे चाहते थे कि महिलाओं को अनावश्यक शारीरिक कठिनाइयों से मुक्ति मिले और वे अपनी ऊर्जा रचनात्मक कार्यों में लगा सकें। उज्ज्वला योजना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

**वन स्टॉप सेंटर योजना :** महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की घटनाओं में सहायता, परामर्श तथा कानूनी सहयोग उपलब्ध कराने हेतु यह योजना प्रारम्भ की गई। महात्मा गाँधी महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा के प्रबल समर्थक थे। वे महिलाओं पर होने वाले किसी भी प्रकार के अत्याचार को मानवता के विरुद्ध मानते थे। इस दृष्टि से यह योजना महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में गाँधीवादी मूल्यों का आधुनिक विस्तार है।

**राष्ट्रीय महिला नीति :** राष्ट्रीय महिला नीति का उद्देश्य महिलाओं को समान अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में भागीदारी प्रदान करना है। यह नीति महिलाओं को विकास प्रक्रिया के केन्द्र में स्थापित करती है। गाँधीजी भी महिलाओं को समाज की सक्रिय भागीदार मानते थे। इसलिए राष्ट्रीय महिला नीति में उनके अनेक विचारों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

### **गाँधीवादी चिंतन और वर्तमान नीतियों में समानताएँ**

**महिला शिक्षा पर बल :** महात्मा गाँधी और वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियाँ दोनों महिला शिक्षा को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानती हैं। गाँधीजी ने शिक्षा को आत्मनिर्भरता का साधन बताया, जबकि वर्तमान योजनाएँ बालिका शिक्षा को विकास की आधारशिला मानती हैं। दोनों दृष्टिकोण इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि शिक्षा महिलाओं को आत्मविश्वास, अधिकारों की जानकारी तथा आर्थिक अवसर प्रदान करती है।

**आत्मनिर्भरता की अवधारणा :** गाँधीजी महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को आवश्यक मानते थे। वर्तमान समय में स्वयं सहायता समूह, मुद्रा योजना, कौशल विकास कार्यक्रम तथा विभिन्न स्वरोजगार योजनाएँ महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने का प्रयास कर रही हैं। इस प्रकार आत्मनिर्भरता दोनों विचारधाराओं का साझा आधार है।

**सामाजिक समानता का लक्ष्य :** गाँधीजी ने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकारों का अधिकारी माना। वर्तमान भारतीय संविधान तथा महिला नीतियाँ भी लैंगिक समानता को बढ़ावा देती हैं। समान अवसर, समान सम्मान तथा समान अधिकार दोनों दृष्टिकोणों का प्रमुख उद्देश्य है।

**सामाजिक कुरीतियों का विरोध :** गाँधीजी ने बाल विवाह, दहेज प्रथा तथा लैंगिक भेदभाव का विरोध किया। वर्तमान सरकार भी बाल विवाह निषेध, दहेज निषेध तथा महिला सुरक्षा संबंधी कानूनों के माध्यम से इन समस्याओं को समाप्त करने का प्रयास कर रही है।

**ग्रामीण महिलाओं का विकास :** गाँधीजी का ग्राम स्वराज सिद्धान्त ग्रामीण विकास पर आधारित था। वर्तमान योजनाएँ भी ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए विशेष प्रयास कर रही हैं। स्वयं सहायता समूह इसका प्रमुख उदाहरण हैं।

### **गाँधीवादी चिंतन और वर्तमान नीतियों में भिन्नताएँ**

**नैतिक बनाम प्रशासनिक दृष्टिकोण :** गाँधीजी महिला सशक्तिकरण को नैतिक एवं सामाजिक जागरण से जोड़ते थे। उनका विश्वास था कि समाज में चेतना और नैतिक परिवर्तन लाकर महिलाओं की स्थिति सुधारी जा सकती है। इसके विपरीत वर्तमान नीतियाँ मुख्यतः प्रशासनिक, कानूनी तथा संस्थागत उपायों पर आधारित हैं। वे योजनाओं, कानूनों तथा वित्तीय सहायता के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने का प्रयास करती हैं।

**कर्तव्य और अधिकार का संतुलन :** गाँधीजी अधिकारों के साथ कर्तव्यों पर भी समान रूप से बल देते थे। उनका मानना था कि अधिकार तभी सार्थक हैं जब व्यक्ति अपने सामाजिक दायित्वों का पालन करे। वर्तमान नीतियों में अधिकारों पर अपेक्षाकृत अधिक बल दिया जाता है, जबकि कर्तव्य पक्ष पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है।

**विकेन्द्रीकृत बनाम केंद्रीकृत व्यवस्था :** गाँधीजी ग्राम स्वराज और स्थानीय स्वशासन के समर्थक थे। वे चाहते थे कि विकास की प्रक्रिया गाँवों और स्थानीय समुदायों से संचालित हो। वर्तमान योजनाएँ प्रायः केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा संचालित होती हैं। इसलिए उनका स्वरूप अपेक्षाकृत अधिक केंद्रीकृत है।

**सादगी और उपभोगवाद :** गाँधीजी सादगी, संयम तथा सीमित आवश्यकताओं के पक्षधर थे। वर्तमान विकास मॉडल उपभोग और बाजार आधारित अर्थव्यवस्था पर अधिक आधारित है। यह अंतर महिला विकास के दृष्टिकोण में भी दिखाई देता है।

### **महिला सशक्तिकरण की वर्तमान चुनौतियाँ**

यद्यपि अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, फिर भी महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है—

**लैंगिक असमानता :** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आज भी अनेक स्थानों पर महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम अवसर प्राप्त होते हैं।



**घरेलू हिंसा** : कानूनी प्रावधानों के बावजूद घरेलू हिंसा की घटनाएँ समाज में विद्यमान हैं।

**आर्थिक निर्भरता** : कई महिलाएँ अभी भी आर्थिक रूप से परिवार पर निर्भर हैं।

**शिक्षा में असमानता** : ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में बालिका शिक्षा अभी भी चुनौती बनी हुई है।

**कार्यस्थल पर भेदभाव** : समान कार्य के लिए असमान वेतन तथा पदोन्नति में भेदभाव जैसी समस्याएँ अभी भी देखी जाती हैं।

**सामाजिक रूढ़िवादिता** : पारंपरिक सोच और रूढ़िवादी मान्यताएँ महिलाओं की प्रगति में बाधक बनती हैं।

### **समकालीन परिप्रेक्ष्य में गाँधीवादी विचारों की प्रासंगिकता**

वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण को केवल सरकारी योजनाओं तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इसके लिए सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्यों तथा सामुदायिक सहभागिता की भी आवश्यकता है। यही वह क्षेत्र है जहाँ गाँधीजी के विचार आज भी अत्यन्त प्रासंगिक हैं। गाँधीजी का मानना था कि वास्तविक परिवर्तन भीतर से प्रारम्भ होता है। यदि समाज महिलाओं के प्रति सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करे तो अनेक समस्याएँ स्वतः समाप्त हो सकती हैं। आज जब महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, भेदभाव तथा असुरक्षा जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, तब गाँधीजी का सत्य, अहिंसा, समानता तथा मानव गरिमा पर आधारित दृष्टिकोण और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

महिला सशक्तिकरण की वर्तमान नीतियाँ महिलाओं को अवसर प्रदान कर रही हैं, जबकि गाँधीवादी चिंतन उन अवसरों के नैतिक और सामाजिक आधार को मजबूत करता है। इसलिए दोनों का समन्वय महिलाओं के समग्र विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियाँ और महात्मा गाँधी का सामाजिक चिंतन परस्पर पूरक हैं। जहाँ आधुनिक नीतियाँ संस्थागत ढाँचा उपलब्ध कराती हैं, वहीं गाँधीवादी विचारधारा उन्हें नैतिक दिशा प्रदान करती है। दोनों के समन्वित प्रयोग से ही वास्तविक और स्थायी महिला सशक्तिकरण संभव है।

### **साहित्य समीक्षा**

प्रस्तुत शोध के लिए महिला सशक्तिकरण, गाँधीवादी सामाजिक चिंतन तथा नारी विकास से संबंधित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया गया। साहित्य समीक्षा से यह ज्ञात होता

है कि विभिन्न विद्वानों ने महात्मा गाँधी के नारी संबंधी विचारों तथा महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया है।

**1. मिश्र, प्रभुदत्त (2005) :** प्रभुदत्त मिश्र ने अपने अध्ययन में महात्मा गाँधी के सामाजिक दर्शन का विश्लेषण करते हुए बताया कि गाँधीजी महिलाओं को समाज की नैतिक शक्ति मानते थे। लेखक के अनुसार गाँधीजी ने महिलाओं की शिक्षा, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक सहभागिता पर विशेष बल दिया। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि भारतीय महिला जागरण में गाँधीजी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है।

**2. शर्मा, रामविलास (2007) :** रामविलास शर्मा ने भारतीय समाज सुधार आंदोलनों के संदर्भ में गाँधीजी के नारी संबंधी विचारों का अध्ययन किया। लेखक ने स्पष्ट किया कि गाँधीजी ने महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर उनकी सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ किया। अध्ययन में महिला अधिकारों और सामाजिक समानता को गाँधीवादी चिंतन का प्रमुख आधार माना गया।

**3. यादव, कमला (2010) :** कमला यादव ने महिला शिक्षा और सशक्तिकरण पर केन्द्रित अपने अध्ययन में बताया कि गाँधीजी महिलाओं की शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन मानते थे। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि महिला शिक्षा से सामाजिक जागरूकता और आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है।

**4. सिंह, उर्मिला (2012) :** उर्मिला सिंह ने महिला विकास योजनाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। उनके अनुसार सरकारी योजनाओं ने महिलाओं की स्थिति में सुधार किया है, किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी के कारण अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो पाए हैं।

**5. चौधरी, ममता (2015) :** ममता चौधरी ने महिला सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन के संबंध का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता उनके सामाजिक सम्मान और निर्णय क्षमता को बढ़ाती है। अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया गया।

**6. वर्मा, राजेश (2017) :** राजेश वर्मा ने गाँधीवादी विचारधारा और समकालीन महिला नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। अध्ययन के अनुसार वर्तमान महिला नीतियों में गाँधीवादी विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है, विशेष रूप से शिक्षा, आत्मनिर्भरता और समानता के क्षेत्रों में।



7. गुप्ता, शालिनी (2018) : शालिनी गुप्ता ने महिला अधिकारों और कानूनी संरक्षण पर अध्ययन किया। उनके अनुसार महिलाओं को अनेक संवैधानिक अधिकार प्राप्त हैं, किन्तु उनके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सामाजिक जागरूकता आवश्यक है।

8. अग्रवाल, सुनीता (2020) सुनीता अग्रवाल ने महिला सशक्तिकरण योजनाओं की सामाजिक उपयोगिता का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि सरकारी योजनाओं से महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि महात्मा गाँधी के नारी संबंधी विचार आज भी प्रासंगिक हैं तथा वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों में उनके विचारों की झलक दिखाई देती है। तथापि तुलनात्मक दृष्टिकोण से इस विषय पर अपेक्षाकृत कम अध्ययन उपलब्ध हैं। यही शोध-अन्तर (Research Gap) प्रस्तुत अध्ययन का आधार है।

### शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध पर आधारित है।

### आँकड़ों का स्रोत

#### प्राथमिक स्रोत

- प्रश्नावली
- साक्षात्कार
- प्रत्यक्ष अवलोकन

#### द्वितीयक स्रोत

- पुस्तकें
- शोध-पत्र
- सरकारी प्रतिवेदन
- महिला नीति दस्तावेज
- पत्र-पत्रिकाएँ

### अध्ययन क्षेत्र

ग्वालियर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से चयनित 120 महिला उत्तरदाताओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

**निदर्शन (Sample)**

कुल 120 महिलाओं का चयन सरल यादृच्छिक निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया।

**आवृत्ति वितरण (Frequency Distribution) की व्याख्या**

आवृत्ति वितरण वह सांख्यिकीय विधि है जिसके माध्यम से एकत्रित आँकड़ों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें किसी विशेष उत्तर, मत या विशेषता की पुनरावृत्ति (Frequency) को संख्यात्मक रूप में दर्शाया जाता है।

प्रस्तुत शोध में प्रत्येक परिकल्पना से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों को पाँच बिन्दुओं वाले मापक (Likert Scale) पर वर्गीकृत किया गया—

1. पूर्णतः सहमत
2. सहमत
3. अनिश्चित
4. असहमत
5. पूर्णतः असहमत

आवृत्ति वितरण के माध्यम से उत्तरदाताओं की प्रवृत्तियों, मतों तथा विचारों का विश्लेषण किया गया है।

परिकल्पना-1 : "महात्मा गाँधी के सामाजिक चिंतन में महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति माना गया है।"

**तालिका - 1**

महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति मानने के संबंध में उत्तरदाताओं की राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	52	43.33
सहमत	40	33.33
अनिश्चित	12	10.00
असहमत	10	8.34
पूर्णतः असहमत	6	5.00

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
कुल	120	100

**Interpretation (व्याख्या)**

तालिका - 1 से स्पष्ट होता है कि 43.33 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 33.33 प्रतिशत सहमत हैं कि महात्मा गाँधी ने महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति माना। इस प्रकार कुल 76.66 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक मत व्यक्त करते हैं। केवल 13.34 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत अथवा पूर्णतः असहमत हैं, जबकि 10 प्रतिशत उत्तरदाता अनिश्चित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता गाँधीजी की नारी संबंधी भूमिका को सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते हैं। यह निष्कर्ष गाँधीजी के उस विचार की पुष्टि करता है जिसमें उन्होंने महिलाओं को राष्ट्र निर्माण और सामाजिक सुधार का आधार माना था।

**परिकल्पना-2 : "वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों में गाँधीवादी विचारधारा के तत्त्व विद्यमान हैं।"**

**तालिका - 2**

वर्तमान महिला नीतियों में गाँधीवादी तत्त्वों की उपस्थिति के संबंध में उत्तरदाताओं की राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	48	40.00
सहमत	42	35.00
अनिश्चित	14	11.67
असहमत	10	8.33
पूर्णतः असहमत	6	5.00
कुल	120	100

**Interpretation (व्याख्या)**

तालिका - 2 के अनुसार 40 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 35 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों में गाँधीवादी विचारधारा के तत्त्व मौजूद हैं। कुल 75 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि वर्तमान योजनाएँ शिक्षा, आत्मनिर्भरता, समानता और ग्रामीण विकास जैसे उन मूल सिद्धान्तों को आगे बढ़ाती हैं जिन्हें गाँधीजी ने अपने सामाजिक चिंतन में विशेष महत्त्व दिया था। यद्यपि 13.33 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत अथवा पूर्णतः असहमत हैं, फिर भी बहुमत का मत इस परिकल्पना के पक्ष में दिखाई देता है।

परिकल्पना - 3 "महिलाओं की शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता के संबंध में गाँधीजी के विचार वर्तमान नीतियों से सामंजस्य रखते हैं।"

**तालिका - 3**

शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता संबंधी गाँधीवादी विचारों और वर्तमान नीतियों के सामंजस्य के संबंध में राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	55	45.83
सहमत	38	31.67
अनिश्चित	11	9.17
असहमत	10	8.33
पूर्णतः असहमत	6	5.00
<b>कुल</b>	<b>120</b>	<b>100</b>

**Interpretation (व्याख्या)**

तालिका 4.3 से ज्ञात होता है कि 45.83 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 31.67 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि महिलाओं की शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता के संबंध में गाँधीजी के विचार वर्तमान महिला नीतियों से सामंजस्य रखते हैं। अर्थात् कुल 77.50 प्रतिशत उत्तरदाता इस परिकल्पना का समर्थन करते हैं। यह दर्शाता है कि वर्तमान योजनाएँ महिलाओं को शिक्षा, कौशल विकास, स्वरोजगार तथा आर्थिक अवसर उपलब्ध कराने पर विशेष बल देती हैं। गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित आत्मनिर्भरता का सिद्धान्त वर्तमान स्वरोजगार एवं

महिला उद्यमिता कार्यक्रमों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इसलिए उत्तरदाताओं का बहुमत दोनों के मध्य गहरे संबंध को स्वीकार करता है।

**परिकल्पना-4 : "वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों ने महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया है।"**

#### तालिका - 4

महिला सशक्तिकरण नीतियों द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक सुधार के संबंध में उत्तरदाताओं की राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	46	38.33
सहमत	41	34.17
अनिश्चित	15	12.50
असहमत	11	9.17
पूर्णतः असहमत	7	5.83
<b>कुल</b>	<b>120</b>	<b>100</b>

#### Interpretation (व्याख्या)

तालिका - 4 के अनुसार 38.33 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 34.17 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों ने महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार किया है। इस प्रकार कुल 72.50 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक राय व्यक्त करते हैं। उत्तरदाताओं का मानना है कि विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, बैंकिंग सुविधाओं तक पहुँच तथा सामाजिक जागरूकता में वृद्धि हुई है। स्वयं सहायता समूहों, कौशल विकास कार्यक्रमों तथा स्वरोजगार योजनाओं ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सहायता प्रदान की है। यद्यपि कुछ उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की है, तथापि बहुमत का मत यह दर्शाता है कि महिला सशक्तिकरण नीतियों का सकारात्मक प्रभाव समाज में दिखाई देता है।

**परिकल्पना-5 : "महिला सशक्तिकरण की वर्तमान नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में अभी भी अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।"**

**तालिका - 5.**

महिला सशक्तिकरण नीतियों के क्रियान्वयन में चुनौतियों के संबंध में उत्तरदाताओं की राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	50	41.67
सहमत	36	30.00
अनिश्चित	12	10.00
असहमत	14	11.67
पूर्णतः असहमत	8	6.66
<b>कुल</b>	<b>120</b>	<b>100</b>

**Interpretation (व्याख्या)**

तालिका - 5 से ज्ञात होता है कि 41.67 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 30 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि महिला सशक्तिकरण नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयाँ विद्यमान हैं। कुल 71.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि योजनाओं की जानकारी का अभाव, प्रशासनिक जटिलताएँ, ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी, सामाजिक रूढ़िवादिता तथा संसाधनों की सीमाएँ इन योजनाओं की सफलता में बाधक बनती हैं। यह परिणाम दर्शाता है कि योजनाओं की अवधारणा और उद्देश्य सकारात्मक हैं, किन्तु उनके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

**परिकल्पना-6 :** "गाँधीवादी दृष्टिकोण महिला सशक्तिकरण की समकालीन नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक हो सकता है।"

**तालिका - 6**

समकालीन महिला नीतियों में गाँधीवादी दृष्टिकोण की उपयोगिता के संबंध में राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	58	48.33

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
सहमत	34	28.34
अनिश्चित	10	8.33
असहमत	11	9.17
पूर्णतः असहमत	7	5.83
<b>कुल</b>	<b>120</b>	<b>100</b>

### Interpretation (व्याख्या)

तालिका - 6 से स्पष्ट होता है कि 48.33 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 28.34 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि गाँधीवादी दृष्टिकोण वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों को अधिक प्रभावी बना सकता है। कुल 76.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस परिकल्पना का समर्थन किया है। उत्तरदाताओं का मत है कि गाँधीजी के सत्य, अहिंसा, नैतिकता, आत्मनिर्भरता, ग्राम स्वराज तथा सामाजिक समानता के सिद्धान्त वर्तमान नीतियों को अधिक व्यावहारिक और समाजोन्मुख बना सकते हैं। यह परिणाम दर्शाता है कि गाँधीवादी विचारधारा आज भी महिला सशक्तिकरण की दिशा में मार्गदर्शक भूमिका निभा सकती है।

### परिकल्पनाओं का सत्यापन

प्रस्तुत शोध में कुल छह परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया। प्रत्येक परिकल्पना से संबंधित आँकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।

**परिकल्पना-1** : परिकल्पना थी कि महात्मा गाँधी के सामाजिक चिंतन में महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति माना गया है।

तालिका 4.1 में 76.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की। अतः यह परिकल्पना **सत्य सिद्ध** होती है।

**परिकल्पना-2** : परिकल्पना थी कि वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों में गाँधीवादी विचारधारा के तत्व विद्यमान हैं।

तालिका 4.2 में 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की। अतः यह परिकल्पना **सत्य सिद्ध** होती है।

**परिकल्पना-3** : परिकल्पना थी कि महिलाओं की शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता के संबंध में गाँधीजी के विचार वर्तमान नीतियों से सामंजस्य रखते हैं।

तालिका 4.3 में 77.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सकारात्मक मत व्यक्त किया। अतः यह परिकल्पना **सत्य सिद्ध** होती है।

**परिकल्पना-4** : परिकल्पना थी कि वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों ने महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया है।

तालिका 5.1 में 72.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की। इसलिए यह परिकल्पना **सत्य सिद्ध** होती है।

**परिकल्पना-5** : परिकल्पना थी कि महिला सशक्तिकरण नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

तालिका 5.2 में 71.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की। अतः यह परिकल्पना भी **सत्य सिद्ध** होती है।

**परिकल्पना-6** : परिकल्पना थी कि गाँधीवादी दृष्टिकोण महिला सशक्तिकरण की वर्तमान नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक हो सकता है।

तालिका 5.3 में 76.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की। इसलिए यह परिकल्पना भी **सत्य सिद्ध** होती है।

#### परिकल्पनाओं की सत्यापन तालिका

क्र.	परिकल्पना	सहमति प्रतिशत	परिणाम
1	महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति माना गया है	76.66%	सत्य सिद्ध
2	वर्तमान नीतियों में गाँधीवादी तत्व विद्यमान हैं	75.00%	सत्य सिद्ध
3	शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता संबंधी विचार वर्तमान नीतियों से सामंजस्य रखते हैं	77.50%	सत्य सिद्ध
4	वर्तमान नीतियों से सामाजिक एवं आर्थिक सुधार हुआ है	72.50%	सत्य सिद्ध
5	नीतियों के क्रियान्वयन में व्यावहारिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं	71.67%	सत्य सिद्ध

क्र.	परिकल्पना	सहमति प्रतिशत	परिणाम
6	गाँधीवादी दृष्टिकोण नीतियों को अधिक प्रभावी बना सकता है	76.67%	सत्य सिद्ध

सत्यापन तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी छह परिकल्पनाएँ उत्तरदाताओं के मतों के आधार पर सत्य सिद्ध हुई हैं। इसका अर्थ यह है कि महात्मा गाँधी के नारी संबंधी विचार आज भी सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक हैं तथा वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों में उनके विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अध्ययन यह भी संकेत करता है कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनेक सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं, किन्तु योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में अभी भी अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इसलिए केवल योजनाओं का निर्माण पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके प्रभावी संचालन तथा सामाजिक जागरूकता का विकास भी आवश्यक है। महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित नैतिकता, आत्मनिर्भरता, सामाजिक समानता तथा जनसहभागिता के सिद्धान्त वर्तमान महिला नीतियों को अधिक प्रभावी एवं परिणामोन्मुख बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

### विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य महात्मा गाँधी के सामाजिक चिंतन में नारी की भूमिका तथा वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन के दौरान प्राप्त सैद्धान्तिक एवं सांख्यिकीय तथ्यों के विश्लेषण से अनेक महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आए। महात्मा गाँधी ने महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति माना था। उनके विचार में महिला केवल परिवार की संरक्षिका नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की सक्रिय भागीदार है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों में भी महिलाओं को विकास प्रक्रिया के केन्द्र में स्थापित करने का प्रयास किया गया है। यह तथ्य गाँधीवादी चिंतन और आधुनिक नीतियों के मध्य वैचारिक समानता को दर्शाता है।

विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ कि महिला शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान योजनाएँ गाँधीजी की विचारधारा से पर्याप्त सामंजस्य रखती हैं। गाँधीजी शिक्षा को महिला आत्मनिर्भरता और सामाजिक जागरण का आधार मानते थे। वर्तमान समय में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, समग्र शिक्षा अभियान तथा विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएँ इसी दिशा में कार्य कर रही हैं। आर्थिक

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में भी समान प्रवृत्ति दिखाई देती है। गाँधीजी कुटीर उद्योगों, श्रम की गरिमा तथा स्वावलम्बन पर बल देते थे। वर्तमान समय में स्वयं सहायता समूह, मुद्रा योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन तथा महिला उद्यमिता कार्यक्रम महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

अध्ययन में यह तथ्य भी सामने आया कि वर्तमान महिला नीतियों ने महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन लाने में योगदान दिया है। महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच तथा राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हुई है। पंचायतों और नगरीय निकायों में महिलाओं के आरक्षण ने उनकी नेतृत्व क्षमता को विकसित किया है। इसके साथ ही अध्ययन ने यह भी स्पष्ट किया कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनेक चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी, लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा, आर्थिक निर्भरता, बाल विवाह तथा सामाजिक रूढ़िवादिता जैसी समस्याएँ योजनाओं की प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं।

सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि वर्तमान महिला नीतियों में गाँधीवादी विचारधारा के तत्त्व विद्यमान हैं। साथ ही यह भी पाया गया कि गाँधीवादी सिद्धान्त वर्तमान महिला नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक हो सकते हैं। अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियाँ मुख्यतः प्रशासनिक एवं संस्थागत उपायों पर आधारित हैं, जबकि गाँधीजी का दृष्टिकोण नैतिक, सामाजिक एवं मानवीय परिवर्तन पर आधारित था। इसलिए यदि दोनों दृष्टिकोणों का समन्वय किया जाए तो महिला सशक्तिकरण के परिणाम अधिक व्यापक और स्थायी हो सकते हैं। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि महात्मा गाँधी के नारी संबंधी विचार आज भी भारतीय समाज के लिए प्रासंगिक हैं तथा वर्तमान महिला नीतियों के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य करते हैं।

### निष्कर्ष

महात्मा गाँधी भारतीय समाज सुधार के उन महान विचारकों में से हैं जिन्होंने महिलाओं को राष्ट्र निर्माण और सामाजिक परिवर्तन की केन्द्रिय शक्ति के रूप में स्थापित किया। उनके सामाजिक चिंतन में नारी को केवल परिवार तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि उसे समाज की नैतिक शक्ति, सांस्कृतिक संवाहक और सामाजिक विकास की आधारशिला के रूप में स्वीकार किया गया। गाँधीजी का विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति उसकी महिलाओं की स्थिति पर निर्भर करती है। इसलिए उन्होंने महिला शिक्षा,



आत्मनिर्भरता, सामाजिक समानता, राजनीतिक सहभागिता तथा सामाजिक सम्मान पर विशेष बल दिया। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों में गाँधीवादी चिंतन के अनेक तत्व विद्यमान हैं। शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय, ग्रामीण विकास तथा महिला अधिकारों से संबंधित योजनाएँ गाँधीजी की मूल अवधारणाओं से प्रेरित प्रतीत होती हैं। बेटा बचाओ-बेटी पढ़ाओ, महिला शक्ति केन्द्र, स्वयं सहायता समूह, कौशल विकास कार्यक्रम तथा विभिन्न महिला कल्याण योजनाएँ महिलाओं को विकास प्रक्रिया में सहभागी बनाने का प्रयास कर रही हैं।

सांख्यिकीय विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि महात्मा गाँधी ने महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति माना था तथा वर्तमान नीतियों में उनके विचारों की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। उत्तरदाताओं का यह भी मत है कि महिला शिक्षा और आत्मनिर्भरता के संबंध में गाँधीजी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं और वर्तमान योजनाओं के माध्यम से उनका आंशिक क्रियान्वयन हो रहा है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि वर्तमान नीतियों ने महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार किया है। महिलाओं की शिक्षा दर में वृद्धि, आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व तथा सामाजिक जागरूकता में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं। इसके बावजूद अनेक चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, रोजगार में असमानता तथा सामाजिक रूढ़िवादिता जैसी समस्याएँ महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।

महात्मा गाँधी का दृष्टिकोण केवल अधिकारों की प्राप्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित था। वर्तमान महिला नीतियाँ जहाँ कानूनी और प्रशासनिक ढाँचा प्रदान करती हैं, वहीं गाँधीवादी विचारधारा इन नीतियों को नैतिक आधार प्रदान कर सकती है। इसलिए महिला सशक्तिकरण के लिए केवल योजनाओं का निर्माण पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक चेतना, जनसहभागिता और मूल्यपरक शिक्षा का विकास भी आवश्यक है।

अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि महात्मा गाँधी का नारी संबंधी सामाजिक चिंतन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना स्वतंत्रता आंदोलन के समय था। वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियाँ यदि गाँधीवादी सिद्धान्तों—सत्य, अहिंसा, समानता, आत्मनिर्भरता और जनसहभागिता—को अधिक व्यापक रूप से अपनाएँ, तो महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया अधिक प्रभावी, समावेशी और स्थायी बन सकती है। अतः यह

कहा जा सकता है कि महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में गाँधीवादी चिंतन और आधुनिक नीतियाँ परस्पर पूरक हैं तथा दोनों के समन्वित प्रयासों से ही महिलाओं के समग्र विकास और सामाजिक न्याय के लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त किया जा सकता है।

### शोध की नवीनता

1. प्रस्तुत अध्ययन में महात्मा गाँधी के नारी संबंधी सामाजिक चिंतन और वर्तमान महिला सशक्तिकरण नीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।
2. अध्ययन में गाँधीवादी सिद्धान्तों की समकालीन प्रासंगिकता का परीक्षण किया गया है।
3. शोध में सैद्धान्तिक एवं सांख्यिकीय दोनों प्रकार के विश्लेषण को सम्मिलित किया गया है।
4. महिला सशक्तिकरण की वर्तमान चुनौतियों को गाँधीवादी दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है।
5. अध्ययन महिला नीति निर्माण और सामाजिक सुधार के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

### सुझाव

1. महिला शिक्षा को ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में और अधिक सुदृढ़ किया जाए।
2. महिला सशक्तिकरण योजनाओं की जानकारी जन-जन तक पहुँचाने हेतु विशेष जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
3. स्वयं सहायता समूहों तथा महिला उद्यमिता कार्यक्रमों को अधिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाए।
4. महिलाओं के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए।
5. दहेज प्रथा, बाल विवाह तथा घरेलू हिंसा के विरुद्ध कठोर सामाजिक एवं कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।
6. विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर लैंगिक समानता संबंधी मूल्यपरक शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए।
7. गाँधीवादी सिद्धान्तों पर आधारित महिला नेतृत्व विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किए जाएँ।



8. पंचायतों तथा स्थानीय निकायों में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित की जाए।
9. महिला सुरक्षा संबंधी कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जाए।
10. महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों में सामाजिक संगठनों एवं समुदाय की सहभागिता बढ़ाई जाए।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, सुनीता. (2020). *महिला सशक्तिकरण : सिद्धान्त और व्यवहार*. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
2. सिंह, सीमा. (2010). *पंचायती राज और महिला सशक्तिकरण*. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
3. गुप्ता, शालिनी. (2018). *महिला अधिकार और भारतीय समाज*. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
4. मिश्र, प्रभुदत्त. (2005). *महात्मा गाँधी का सामाजिक दर्शन*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. नारायण, रामजी. (2016). *गाँधी दर्शन और समकालीन समाज*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. सिंह, उर्मिला. (2012). *महिला कल्याण योजनाएँ और सामाजिक विकास*. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
7. शर्मा, रामविलास. (2007). *भारतीय समाज और गाँधी विचार*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
8. यादव, कमला. (2010). *महिला शिक्षा और सशक्तिकरण*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
9. वर्मा, राजेश. (2017). *गाँधीवादी चिंतन और महिला विकास*. नई दिल्ली: शिप्रा प्रकाशन।
10. भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. (2022). *महिला सशक्तिकरण संबंधी वार्षिक प्रतिवेदन*. नई दिल्ली: भारत सरकार।
11. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय महिला नीति : एक समीक्षा*. नई दिल्ली: महिला एवं बाल विकास मंत्रालय।



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

12.भट्ट, कृष्णदत्त. (2019). *महात्मा गाँधी और नारी विमर्श*. नई दिल्ली: ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन।